दिल के दौरे के उपचार के विषय में डॉ० लूका क्या कहते है

मित्रों, अब तक हम इस विषय पर बात कर चुके है कि किस कारण दौरे पड़ते है। आज तक उनके ऊपचार के विषय में बात करेंगे। यह बहुत ही महत्वूपर्ण है। पिछले पाँच वर्षों में दिल के दौरे के ऊपचार में बहुत से परिवर्तन आये है। पाँच वर्ष पहले तक दिल के दौरे के ईलाज में कई दशकों तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ। यह परिवर्तन किस कारण हुए? साथ ही इससे रोगियों के जीवन में क्या परिवर्तन आये?

पहली बात, याद करें कि दौरे क्यों पड़ते है? दौरे कई कारणों से पड़ सकते है। इनमें से तीन कारण प्रमुख है। पहला कारण, दौरा खून का थक्का, जो आरटरी के कड़ा होने के कारण पड़ता है। जब आरटरी मस्तिष्क में खून ले जाना बन्द कर देती है। यह कठोर हिस्सा टूटकर आरटरी को बन्द कर देता है। इसके कारण आरटरी पूरी तरह से बन्द हो जाती है क्योंकि थक्के के जमने से मस्तिष्क के उस भाग को खून का संचालन नहीं होता है। यह दौरा बहुत ही महत्वपूर्ण है। दूसरा कारण, जब यह थक्का ह्रदय में जमकर आता है जो नियंत्रित रूप से नहीं धड़क रहा है। खून का थक्का ह्रदय से मस्तिष्क में जाता है। यह थक्का पहले प्रकार के दौरे के समान ही काम करता है। यह खून का संचालन बन्द कर देता है परन्तु इसका ऊपचार बिल्कुल ही भिन्न है। तिसरे प्रकार का दौरा, रक्त कोशिका या आरटरी फट कर लीक होने लगती है। अतः आरटरी से खून निकलकर मस्तिष्क में बहने लगता है। यह दौरा बहुत सामान्य नहीं है।

मित्रों आइये पहले दौरे को पहले देखें, इसमें आरटरी का स्थानीय हिस्सा कठोर होकर टूट जाता है और खून का थक्का जम जाता है। इस प्रकार का दौरा बहुत ही आम है, तथा इसका ऊपचार भी किया जा सकता है। आज के संदेश में इस दौरे पर हम विचार करेंगे। इस प्रकार के रोगियों को यदि एकदम सहायता मिले तो वे दौरे एवं इसके प्रभाव से एक दम ठीक हो सकते है।

मित्रों, आइये हम संजय की कहानी को देखें। यह एक सच्ची कहानी है। हमने इस व्यक्ति का नाम बदल दिया है। श्रीमान संजय को पहले कभी दौरा नहीं पड़ा था। एक दिन ऐसा हुआ कि अचानक उसके बाये हाथ एवं पैर में कमजोरी हुई। उसने अपनी पत्नी को बुलाया जिसने एम्बूलेंस (अस्पताल की गाड़ी) को बुलाया। उसकी पत्नी ने एम्बूलेंस वाले से कहा की संभव है उसके पति को दिन का दौरा भी पड़ हो। अतः एम्बूलेंस एकदम ही आ गयी। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि एम्बूलेंस बाले को बताना चाहिए की बिमारी कितनी गंभीर है। यदि एम्बूलेंस बाले को मालूम है कि उन्हें दिल के दौरे वाले के पास जाना है, वे थोड़ा जल्दी आएँगे। एमरजेन्सी में पहुँचते ही डॉक्टर ने ब्रेन का (दिमाग) सी.टी. स्केन का आदेश दिया। संजय साहब के ब्रेन का स्केन सामान्य आया। अतः डॉक्टर उसे बहुत ही अद्भुत दवाई टी.पी.ए. देना चाहते थे। इस दवाई से संजय साहब की आरटरी का थक्का टूट जाता जिससे उसकी आरटरी एवं मस्तिष्क के रक्त का बहाव सामान्य हो जाता। श्रीमान संजय दिन का दौरा पड़ने से बच गये। उनके शरीर का किसी प्रकार की हानी नहीं हुई। कुछ सप्ताह बाद वो अपने काम पर लौट गये।

इसके विषय में पूछने पर संजय ने बताया, मैं परमेश्वर का धन्यवाद देता हूँ जो कुछ उसने मेरे लिए किया। साइंस के अचरजकारी, स्वास्थ्य के कार्य के कारण वह गच गये, मेरा शरीर बिल्कुल नया है। जहाँ उसे धन्यवाद देना वहाँ उसने परमेश्वर का धन्यवाद दिया।

मित्रों, यह आश्चर्यकारी दवाई कैसे काम करती है? प्रथम, याद रखे कि आरटरी में खून का थक्का जम चुका था। यदि डॉक्टर इस नई दवाई को देते है तो लक्षण के शुरूआत के पहले तीन घण्टों में तो खून के थक्कों को तोड़ा जा सकता है, और रोगी को बचाया जा सकता है। बहुत से ऐसे रोगी है, जिन्हें किन्हीं कारणों से यह दवाई नहीं मिल पाती। इसके लिए डॉक्टर से बात करें। यह दवाई विश्व के सब देशों में उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, बहुत से रोगी साइड्इफेक्ट के कारण इस इवाई को नहीं ले सकते है। यह दवाई बहतु महंगी भी है।

बहुत सारे लोग जिन्हें दौरा पड़ता है, वे दौरा पड़ने के कुछ ही मिनटों या घण्टों में मर जाते हैं। अतः दौरे की रौकथाम इनके लिए या किसी अन्य के लिए आवश्यक है। इससे पता चलता है। कि प्रत्येक रोगी मेडिकल साईंस के द्वारा नहीं बचाया जा सकता है। अतः प्रश्न यह है, जो रोगी मरते है, मृत्यु के बाद क्या होता है। मेडिकल साइंस तमाम खोजों के बाद भी इनकी मदद करने में असहाय है। क्या मृत्यु के बाद लोगों का अस्तित्व खत्म हो जाता है या इसके बाद भी जीवन है। बाइबल बताती है कि जो लोग मर जाते है वे हमेशा के लिए जीवित रहेंगे।

इनमें से कुछ अनंत जीवन के लिए और कुछ अनंत मृत्यु के लिए। हम यह कैसे जाने की हमारा क्या होगा? क्या हम इसका उत्तर जान सकते है? हाँ बाइबल अनंत जीवन की बात करती है, जिसका आरम्भ हमारे वर्तमान जीवन से होता है। आइये इस विषय में बात करने से पहले उनकी बात करे जो दौरे से पूर्ण रूप से चंगे नहीं होते।

मित्रों, कुछ लोग चंगे नहीं होते, संजय के समान जिन्हें समय पर टी.पी.ए. मिल जाते है। उन्हें दौरा पड़ता है, इसके परिणामस्वरूप उन्हें हाथ या पैर में या घुटने में कमजोरी आ जाती है। इन रोगियों की मदद् के लिए क्या किया जा सकता है? आइये मैं आपका परिचय दूसरे रोगी श्रीमति वाइट से कराऊँ। इनकी उम्र 75 वर्ष की है, जिन्हें दौरा पड़ा है। वे न तो चल फिर पाती और न खा पाती है, क्योंकि उनके हाथ और पैर कमजोर है उन्हें बात करने करने और गुटरकने में परेशानी होती है। इनकी मदद् के लिए क्या किया जा सकता है? पहली बात, यह बात ध्यान में रखनी आवश्यक है कि दौरा पड़ने के 3–6 महिनों में रोगी की दशा में कुछ सुधार होता है। मिसेस वाइट की मदद् के लिए क्या करे ताकि वो दौरे से ठीक हो? मित्रों, मुख्य बात है, व्यायाम, जो दौरे के एक या दो दिन बाद ही शुरू होती है। मिसेस वाइट अस्पताल में ही थी जब उसके थेरेपिस्ट ने उसका व्यायाम शुरू किया इससे पहले कि वो चल पाती। कैसा व्यायाम? पहली बात इसे हम रनेज आफ मोशन कहते है, वो व्यायाम जिसे कोई भी परिवार का सदस्य करा सकता है। यह है, हाथ या पैर को आगे पीछे हिलाना। इससे मांसपेशी की शक्ति बनी रहती है। इसके बाद जैसे ही मरीज में ताकत आती है वह चल फिर सकता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है जब रोगी जिसे दौरा पड़ा है नियमित व्यायाम करना शुरू कर देता है, वे दौरे से आई हुई कमजोरी पर जय प्राप्त करना शुरू कर देता है।

वैद्य लूका हमें एक ऐसे व्यक्ति के विषय में बताते है जिसे मिसेस वाइट के समान शरीर के एक हिस्से में दौरा पड़ा था, उसके हाथ एवं पैर में। दौरे के आरम्भ उसके हाथ पैर की ताकत बहुत कम थी। चलने में मदद् के लिए वो छड़ी लेकर कई वर्षों से चलता था। वह बिना लंगड़ाये ठीक से नहीं चल पाता था। अतः ठीक से चलने के लिए उसे दो छड़ी लेनी पड़ती थी। दो छड़ी लेकर चलने से उसके हाथ बहुत ही मजबूत बन गये थे। वास्तव में उसके हाथ मजबुत होने के साथ सामान्य से अधिक मजबूत हो गये क्यों वो दो छड़ी उपयोग में लाता था। इससे पता चलता है व्यायाम की आवश्यकता का।

मित्रों, बहुत से लोग पूछते है कि इसके बाद दौरा न पड़े इससे बचने के लिए दवाई है क्या? इस प्रश्न का उत्तर है हाँ। लेकिन इस प्रश्न के दो उत्तर है। पहला उत्तर है, बीमारियों के लिए, जिससे दौरा और भी भयंकर हो जाता है या बिगड़ जाता है। दो बीमारियाँ जो बहुत ही महत्वपूर्ण है मधूमेह एवं उच्च रक्तचाप। इन दो बीमारियों पर नियंत्रण बहुत जरूरी है दौरा पड़ने के बाद आप अपने डॉक्टर से इसके विषय में बात करें, ताकि इन दो बीमारियों से बचा जा सके। व्यायाम से मधूमेह एवं रक्तचाप, दोनों बीमारियों को ठीक करने में मदद मिलती है।

मित्रों दूसरा उत्तर है, इन दो समूहों की दवाई, खाने से ओ आने वाले दौरे से बचा जा सकता है। पहली दवाई है, एसप्रीन, प्रतिदिन 325 एम.जी. की गोली लेने से दौरा नहीं पड़ता। एक और दवाई प्लेविक्स लेने से दौरे से बचा जा सकता है। ये दवाईयाँ लेने से पहले अपने डॉक्टर से बात करें कि ये दवाईयाँ आपके लिए ठीक होगी? प्रत्येक दवाई के दुष्परिणाम होते है, यदि उन्हें गलत प्रकार से लिया जाए तो हानि हो सकती। इसलिए डॉक्टर से सलाह लें।

मित्रों, अन्त में है हमारा खानपान जो इसमें मदद् करता है। बूढ़े लोगों को जवानों की तुलना में ज्यादा दौरे पड़ते हैं। बूढ़े लोगों को ज्यादा वज़न होता है। बढ़े हुए वज़न से ज्यादा दौरे पड़ते है। जिन्हें दौरे पड़ चुके है उन्हें खाने पर ध्यान देना चाहिए। उदाहरण के तौर पर जिन मरीजों को मधूमेह है उन्हें मिठा कम खाना चाहिए। यदि उन्हें उच्च रक्तचाप है तो कम नमक खाना चाहिए। एक खानपान विशेषज्ञ इसमें मदद् कर सकता है।

मित्रों, देखें उन रोगियों का क्या होता है जो दौरे के कारण बहुत बीमार हो जाते है। या चल फिर भी नहीं पाते या मर जाते है! वे लोग जिन्हें दौरा पड़ता है उनकी तुलना में जिन्हें नहीं पड़ता है ज्यादा तनाव में रहते है। इससे बात कुछ समझ में आती है। दौरे के कारण कई बार अपंगता आ जाती है। इससे व्यक्ति की बात करने या चलने की शक्ति खत्म हो जाती है। इसे समझना कठिन है इनकी हम कैसे मदद् कर सकते हैं?

बाइबल में वर्णित वैद्य लूका के लेखों से पता चलता है कि एक मनुष्य जन्म से लंगड़ा था। एक दिन यीशु के दो चैले उसे मिले। लंगड़े व्यक्ति ने इन दोनों, पतरस एवं यूहन्ना से भीख माँगी। पतरस और यूहन्ना ने इससे कहा कि पैसा तो उनके पास नहीं है। परन्तु जो कुछ उनके पास है वे उसे देंगे। उनके पास यीशु की चंगा करने सामर्थ्य थी। उन्होंने इस लंगड़े व्यक्ति से कहा कि हम यीशु के नाम से तुझे चंगाई देते है, वह तुरन्त चलने लगा।

बाद में यह पूछने पर कि यह लंगड़ा कैसे चलने लगा पतरस और यूहन्ना ने कहा, "इस मनुष्य को जिसे तुम जानते और देखते भी हो बल मिला है, उसी विश्वास ने जो उसके द्वारा है, इसे सबके सामने पूर्ण चंगाई दी है" (प्रेरितों के काम 3:16)। यह कितनी अद्‌भुत कहानी है। इससे भी अद्‌भुत यह है कि जिस यीशु ने उसे चंगाई दी जिसके कारण वो चल फिर पाया, वो नया जीवन भी देता है। इस नये जीवन का क्या अर्थ है?

मित्रों, सुनें वैद्य लूका क्या लिखता है जो पतरस और यूहन्ना यीशु के विषय में कहते है, "किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों के बीच में कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पाएँ" (प्रेरितों के काम 4:12)। यह अद्‌भुत सत्य है। केवल यीशु के नाम में उद्धार है। यहाँ उद्धार का क्या अर्थ है। पाप से उद्धार, कैसा पाप? वो पाप जो हमें परमेश्वर से अलग करता है। घमण्ड का पाप, लालच, स्वार्थ, कड़वाहट, बुरे विचारों का पाप। ये वे पाप है जो हमें परमेश्वर से अलग करते है। इससे क्या फर्क पड़ता है?

परमेश्वर कहता है, "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनंत जीवन है" (रोमियों 6:23)।

यह निश्चित रूप से अद्‌भुत तथ्य है। जबकि हमें मरना था। परमेश्वर ने हमारे पाप अपने ऊपर ले लिए ताकि हम अनंत जीवन पाएँ। यीशु ने कहा, "मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएँ और बहुताएत से पाएँ" (यूहन्ना 10:10)। यदि हमें दौरा भी पड़े, जो हमें कमजोर कर देता है या स्थाई रूप से हमारे हाथ पैर खराब भी हो जाये। आपको यीशु के द्वारा पूरा जीवन मिल सकता है। इसके साथ ही यदि आप आज दौरे से मर भी जाये या किसी ऐसे दूसरे को जानते हैं। आपको डरने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि कि आप आप या वह यीशु के द्वारा अनंत जीवन पा सकते हैं। यह कैसे होगा, आप यह पूछ सकते है, सीधी सादी यह प्रार्थना करें।

"प्रभु यीशु, मैने पाप किया है और मैं इसे मान लेता हूँ कि मैं ने आपके विरूद्ध पाप किया है। प्रभु यीशु मेरे पाप ले ले। मैं विश्वास करता हूँ कि मेरे पापों के लिए क्रूस पर मरे और आज जीवित है। यदि। आपने यह प्रार्थना की है तो आप अनंत के लिए परमेश्वर की सन्तान बन गये है।" प्रभु यीशु के नाम से, आमीन!

प्रभु आप सबको आशीष दें।